खंड १५ नंबर २ अप्रैल २०१६

आरआईएस डायरी

–अंतरराष्ट्रीय विकास के लिए नीतिगत अनुसंधान

'वैश्विक विकास पर पहल' का शुभारंभ

आरआईएस ने ब्रिटेन के अंतर्राष्ट्रीय विकास विभाग (डीएफआईडी) के साथ मिलकर संयुक्त रूप से 9 जनवरी, 2019 को नई दिल्ली में 'वैश्विक विकास पर पहल' के शुभारंभ का आयोजन किया। इस पहल के जरिए विकास से जुड़े अनुभवों, ज्ञान और तकनीकी जानकारियों को साझा करने की दिशा में एक अहम यात्रा शुरू की गई है जिसने एक समावेशी और समान साझेदारी के लिए एक नया पथ निर्धारित किया है। यह साझेदारी दरअसल विकास

शेष पृष्ठ 7 पर जारी.....

आरआईएस के चेयरमैन राजदूत (डॉ.) मोहन कुमार 'वैश्विक विकास पर पहल ' के शुभारंभ के दौरान अन्य प्रतिष्ठित पैनल सदस्यों के साथ।

बापा+40 में आरआईएस की पुस्तक राउल प्रिबिश और विकास रणनीति

आरआईएस की पुस्तक 'राउल प्रिबिश और विकास रणनीति' के विमोचन के अवसर पर प्रतिष्ठित पैनल सदस्य।

आरआईएस ने संयुक्त राष्ट्र के साथ एक मान्यता प्राप्त साझेदार संगठन के रूप में 20 से 22 मार्च 2019 तक अर्जेंटीना के ब्यूनस आयर्स में दक्षिणीय सहयोग पर आयोजित द्वितीय उच्चस्तरीय संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (बापा + 40) में भाग लिया। इस अवसर पर आरआईएस ने नेटवर्क ऑफ सदर्न थिंक टैंक्स् (नेस्ट) के तत्वावधान में अलग से आयोजित चार कार्यक्रमों की मेजबानी भी की। इन कार्यक्रमों के दौरान जाने–माने विद्वानों, विशेषज्ञों, और नीति निर्माताओं के साथ पैनल परिचर्चाएं आयोजित की गईं जिनका उद्देश्य विकास सहयोग के प्रति एशियाई दृष्टिकोण के पहलुओं को प्रस्तुत

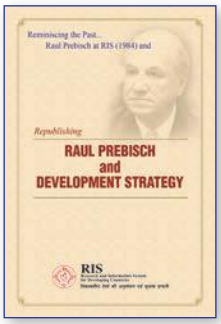

करना; दक्षिणीय सहयोग (एसएससी) में बहुलता या अनेकता को दर्शाना; स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी तक बेहतर पहुंच की आवश्यकता को रेखांकित करना; और आकलन, निगरानी एवं मूल्यांकन से संबंधित मुद्दों पर गहन विचार–विमर्श करना था।

आरआईएस ने नेस्ट के साथ साझेदारी में 20 मार्च 2019 को विदेश एवं उपासना मंत्रालय, पालिसियो सैन मार्टिन, ब्यूनस आयर्स में 'प्रभाव आकलन और निगरानी एवं मूल्यांकन बनाम दक्षिणीय सहयोग:

शेष पृष्ठ 2 पर जारी.....

शेष पृष्ठ 1 से जारी.....

वाद–विवाद की स्थिति' पर परिचर्चा की मेजबानी भी की। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. फिलानी म्थेम्बु, कार्यकारी निदेशक, इंस्टीट्यूट फॉर ग्लोबल डायलॉग, दक्षिण अफ्रीका ने की और सह–अध्यक्षता प्रोफेसर सचिन चतुर्वेदी, महानिदेशक, आरआईएस ने की। पैनल के सदस्यों में ये शामिल थेः प्रोफेसर शिउली जू, डिप्टी डीन, कृषि में दक्षिणीय सहयोग के लिए चीनी संस्थान (सीआईएसएससीए), सीएयू, चीन; डॉ. एंड्रे डी मेलो ई सूजा, सीनियर रिसर्च फेलो, इंस्टीट्यूटो डी पेसक्विसा इकोनॉमिका एप्लीकाडा (आईपीईए), ब्राजील; डॉ. स्टीफन क्लिंगबिएल, विभाग प्रमुख – द्विपक्षीय और बहुपक्षीय विकास नीति, जर्मन विकास संस्थान (डीआईई), जर्मनी; श्री मारियो पेजिनी, निदेशक, ओईसीडी विकास केंद्र, फ्रांस; और प्रोफेसर मिलिंदो चक्रबर्ती, विजिटिंग फेलो, आरआईएस। परिचर्चा के बाद एक सवाल–जवाब सत्र आयोजित किया गया। इस अवसर पर राउल प्रिबिश पर एक विशेष पुस्तक *'राउल प्रिबिश और विकास रणनीति'* शीर्षक का विमोचन भी किया गया। इस पुस्तक में 'उत्तर–दक्षिण और दक्षिणीय संबंधों में नए परिप्रेक्ष्य' पर आयोजित सेमिनार की कार्यवाही शामिल है। इसमें राउल प्रिबिश के कुछ महत्वपूर्ण योगदानों का भी उल्लेख है। विचार–विमर्श के दौरान प्रभाव आकलन और निगरानी एवं मूल्यांकन के बीच वैचारिक व राजनीतिक मतभेदों की जानकारी और इसके साथ ही मांग–संचालित आकलन एवं मूल्यांकन कार्यों के लिए भारत, पराग्वे और ब्राजील जैसे विकासशील देशों द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की गई है।

अर्जेंटीना में भारत के राजदूत श्री संजीव रंजन स्वास्थ्य क्षेत्र पर आरआईएस प्रकाशन के विमोचन के दौरान अन्य प्रमुख पैनल सदस्यों के साथ।

आरआईएस, नेस्ट और कृषि में दक्षिणीय सहयोग के लिए चीनी संस्थान (सीआईएसएससीए) ने 19 मार्च 2019 को ब्यूनस आयर्स विश्वविद्यालय में 'दक्षिणीय सहयोग पर एशियाई वृत्तांत के अन्वेषण' पर एक परिचर्चा का आयोजन किया। सत्र की अध्यक्षता चीन कृषि विश्वविद्यालय (सीएयू) के अध्यक्ष प्रोफेसर सन किसिन ने की और इसकी सह–अध्यक्षता आरआईएस के महानिदेशक प्रोफेसर सचिन चतुर्वेदी ने की। पैनल के अन्य सदस्य में ये शामिल थेः डॉ. एंथेया मुलाकला, निदेशक, द एशिया फाउंडेशन (टीएएफ); श्री आर्टेमी इजमेस्तीव, निदेशक ए.आई., सियोल में यूएनडीपी नीतिगत केंद्र, दक्षिण कोरिया; डॉ. स्वेन ग्रिम, अंतर–सहयोग एवं अंतरराष्ट्रीय सहयोग के सह–अध्यक्ष, जर्मन विकास संस्थान (जीडीआई), जर्मनी; प्रोफेसर शिउली जू, डिप्टी डीन, कृषि में दक्षिणीय सहयोग के लिए चीनी संस्थान (सीआईएसएससीए), सीएयू, चीन; श्री मिनयंग जियोंग, डिप्टी कंट्री डायरेक्टर, कोरियाई अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (कोइका), दक्षिण कोरिया; और श्री प्रणय सिन्हा, विजिटिंग फेलो, आरआईएस।

आरआईएस के महानिदेशक प्रो. सचिन चतुर्वेदी साथी पैनल सदस्यों के साथ।

आरआईएस और नेस्ट ने 21 मार्च 2019 को ब्यूनस आयर्स स्थित इंस्टीट्यूटो नेशनल सैनमार्टिनियानो में 'स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी तक पहुंच के लिए दक्षिणीय सहयोग' विषय पर एक परिचर्चा की मेजबानी भी की। इस दौरान क्षेत्रवार सहयोग पर गहन विचार–विमर्श किया गया। आयोजन की शुरूआत अर्जेंटीना में भारत के राजदूत श्री संजीव रंजन द्वारा आरआईएस के एक विशेष प्रकाशन *'सम्मिलित रूप से एक स्वस्थ भविष्य की ओर – स्वास्थ्य सेवा में भारत की साझेदारियां'* के विमोचन के साथ हुआ। इसके बाद एक परिचर्चा हुई जिसकी सह–अध्यक्षता डॉ. कार्लोस मारिया कॉररिया, कार्यकारी निदेशक, दक्षिण केंद्र, जिनेवा और डॉ. एंड्रे डी मेलो ई सूजा, सीनियर रिसर्च फेलो, इंस्टीट्यूटो डी पेसक्विसा इकोनॉमिका

शेष पृष्ठ 6 पर जारी....

दक्षिण अफ्रीका की उप अंतर्राष्ट्रीय संबंध मंत्री माननीया सुश्री रेगिना मैकगाबो महाउले के साथ संवादात्मक सत्र

आरआईएस ने 9 जनवरी, 2019 को दक्षिण अफ्रीका की उप अंतर्राष्ट्रीय संबंध मंत्री माननीया रेगिना मैकगाबो महाउले के साथ एक संवादात्मक सत्र का आयोजन किया। आरआईएस के चेयरमैन डॉ. मोहन कुमार ने सत्र की अध्यक्षता की, और आरआईएस के महानिदेशक प्रोफेसर सचिन चतुर्वेदी ने स्वागत भाषण दिया। इस अवसर पर 'भारत–दक्षिण अफ्रीका साझेदारी और नई विश्व व्यवस्था' पर आयोजित पैनल परिचर्चा में जिन विशेषज्ञों ने विचार विनमय किया: वे थे राजदूत वीरेंद्र गुप्ता, अध्यक्ष, भारतीय अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद; राजदूत राजीव भाटिया, पूर्व महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए; डॉ. फिलानी म्थेम्बु, कार्यकारी निदेशक, इंस्टीट्यूट फॉर ग्लोबल डायलॉग, दक्षिण अफ्रीका; और सुश्री रुचिता बेरी, सीनियर रिसर्च एसोसिएट, आईडीएसए। परिचर्चा में सहयोग पहलुओं और नीतिगत संवादों को

दक्षिण अफ्रीका की उप अंतर्राष्ट्रीय संबंध मंत्री माननीया रेगिना मैकगाबो महाउले अन्य प्रमुख पैनल सदस्यों के साथ।

सरकार से परे ले जाने की दिशा में 'ट्रैक 1.5 कूटनीति' में गैर–सरकारी पदाधिकारियों के महत्व को रेखांकित किया गया। भारत और दक्षिण अफ्रीका के प्रबुद्ध मंडलों (थिंक–टैंक) के बीच सहयोग बढ़ने से प्रासंगिक, समयबद्ध और व्यावहारिक अनुसंधान की संभावनाएं बढ़ जाती हैं जो वास्तविक जमीनी बदलाव ला सकती हैं। इस तरह के प्रयास सरकारी स्तर पर सहयोग के साथ–साथ लोगों के परस्पर सहयोग को भी नई गति प्रदान कर सकते हैं।

पैनल चर्चा के बाद माननीया सुश्री रेगिना मैकगाबो महाउले, ने दक्षिण अफ्रीका

शेष पृष्ठ 9 पर जारी.....

orleku of'od ;FkkFk dk n'kku d fy, cgi{kh; fudk;k e lèkkj vko';d% ikQlj vfuy ldyky

दक्षिण अफ्रीका ने संयुक्त राष्ट्र प्रणाली, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी), ब्रेटन वुड्स संस्थानों (आईएमएफ एवं विश्व बैंक) और डब्ल्यूटीओ के भीतर सुधार सुनिश्चित करने का आह्वान किया है, ताकि ये अंतरराष्ट्रीय निकाय वैश्विक समुदाय की वर्तमान यर्थाथ को प्रतिबिंबित कर सकें। इसने यह इच्छा भी जताई है कि उभरती अर्थव्यवस्थाओं का प्रमुख ब्लॉक ब्रिक्स (जिसमें ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका शामिल हैं) बहुपक्षीय प्रणाली में लंबे समय से मौजूद 'अर्ध–पंगुता' या'–अर्ध–निष्क्रियता' से निपटने के तरीकों पर ध्यान दिया जाए।

इन बहुपक्षीय संस्थानों के भीतर सुधार लाने की वकालत करते हुए दक्षिण अफ्रीका में अंतर्राष्ट्रीय संबंध एवं सहयोग विभाग के उप महानिदेशक और ब्रिक्स, आईबीएसए एवं जी 20 देशों में दक्षिण अफ्रीका के शेरपा तथा आरआईएस के वरिष्ठ सहायक

आरआईएस के वरिष्ठ सहायक फेलो प्रोफेसर अनिल सुकलाल अन्य प्रतिष्ठित पैनल सदस्यों के साथ।

फेलो प्रोफेसर अनिल सुकलाल ने कहा: 'आपके पास (अब) एक ऐसी संयुक्त राष्ट्र प्रणाली है जो 'अर्ध–निष्क्रिय' है। आपके पास एक यूएनएससी है जो ऐसे संकल्पों को अपनाती है जिनकी ओर कोई भी ध्यान नहीं देता है और अब आपको पी2 एवं पी3 के बीच स्थायी विभाजन साफ नजर आता है।' उन्होंने यह भी कहा: 'यही अर्ध–निष्क्रियता (संपूर्ण) बहुपक्षीय प्रणाली में है। हमें इन कमियों को निरंतर दूर करने के लिए ब्रिक्स जैसे प्लेटफॉर्मों का उपयोग करना होगा और यह देखना होगा कि जब तक हम इन विचारों (सुधार) पर आम सहमति प्राप्त करने के लिए पर्याप्त तेजी सुनिश्चित नहीं कर लेते हैं, तब तक हम इसे रडार पर कैसे बनाए रखते हैं।' वरिष्ठ राजनयिक तिरुवनंतपुरम स्थित विकास अध्ययन केंद्र

शेष पृष्ठ 4 पर जारी.....

शेष पृष्ठ 3 से जारी.....

(सीडीएस) में शिक्षाविदों और छात्रों को संबोधित कर रहे थे।

इस ओर ध्यान दिलाते हुए कि संयुक्त राष्ट्र की 75वीं वर्षगांठ जल्द ही मनाई जाएगी (वर्ष 2020 में), उन्होनें कहाः 'हमारे पास अब भी पी5 है, लेकिन यह पी5 कितना प्रभावशाली या कारगर है? एक ऐसा भी समय आएगा जब यह अप्रासंगिक हो जाएगा। आपके पास अन्य प्रमुख वैश्विक खिलाड़ी या मुल्क होंगे जो वैश्विक परिदृश्य पर अपनी ताकत का खुला प्रदर्शन करेंगे और उनके व्यापक प्रभाव में आकर आपको संरचना (यूएन की) बदलनी होगी। समय और बदलते वैश्विक परिवेश से यह संभव होगा।' वह 30 जनवरी, 2019 को सीडीएस में 'उभरती अर्थव्यवस्थाओं के बीच सहयोग और वैश्विक गवर्नेंसः ब्रिक्स अनुभव से सबक' विषय पर व्याख्यान देने के बाद सवालों का जवाब दे रहे थे। इस कार्यक्रम का आयोजन आरआईएस के सहयोग से किया गया था। प्रोफेसर सुकलाल ने अपने व्याख्यान में वैश्विक दक्षिण के देशों के बीच सहयोग मजबूत करने की आवश्यकता सहित विभिन्न पहलुओं और जी 20, ब्रिक्स एवं आईबीएस सहित वैश्विक तथा क्षेत्रीय प्लेटफॉर्मों पर होने वाली बैठकों को और ज्यादा सार्थक करने के महत्व पर भी अपने विचार व्यक्त किए। इसके अलावा, उन्होंने ब्रिक्स देशों के लोगों के बीच अधिक से

राजदूत अनिल सुकलाल आरआईएस में संवादात्मक सत्र में शिरकत करते हुए।

अधिक संवाद सुनिश्चित करने और ब्रिक्स देशों के प्रबुद्ध मंडलों (थिंक–टैंक) के बीच साझेदारियों को बेहतर बनाने हेतु पर भी विशेष जोर दिया। राजदूत ने जी 20 शिखर सम्मेलन के घोषणा पत्रों में विकासशील देशों के आपसी हितों वाले अधिक पहलुओं सहित ब्रिक्स के संपर्क (आउटरीच) कार्यक्रमों का विस्तार करने का भी सुझाव दिया।

अपने भारत दौरे के दौरान उन्होंने पांडिचेरी विश्वविद्यालय के यूनेस्को मदनजीत सिंह दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संस्थान (यूएमआईएसएआरसी) में भी अपने विचार प्रस्तुत किए जो दक्षिण एशियाई अध्ययन का एक अहम केंद्र है। उन्होंने आरआईएस के सहयोग से आयोजित '21वीं सदी में गांधी की प्रासंगिकता' विषय पर व्याख्यान दिया। राजदूत सुकलाल ने महात्मा गांधी एवं नेल्सन मंडेला के जीवन में समानताओं का उल्लेख किया और इसके साथ ही यह भी बताया कि अहिंसा, सत्य एवं सतत विकास सहित उनके सिद्धांत और दर्शन आज भी किस तरह से प्रासंगिक हैं। उन्होंने गांधी एवं मंडेला के सिद्धांतों के साथ–साथ वसुधैव कुटुम्बकम (पूरा विश्व एक परिवार है) और उबंटू ('मैं हूं क्योंकि हम हैं' या साझाकरण के सार्वभौमिक बंधन में विश्वास जो पूरी मानवता को जोड़ता है) पर भी आधारित एक नई विश्व व्यवस्था का निर्माण करने पर विशेष बल दिया। उन्होंने 2 फरवरी 2019 को अहमदाबाद में 'गांधी मंडेला विरासत' विषय पर व्याख्यान दिया जिसे गुजरात विकास अनुसंधान संस्थान और गुजरात विद्यापीठ ने संयुक्त रूप से आयोजित किया। इसके अलावा, उन्होंने 28 जनवरी 2019 को 'अफ्रीका में भारत और दक्षिण अफ्रीका' विषय पर भी व्याख्यान दिया जिसे स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जेएनयू, नई दिल्ली द्वारा आयोजित किया गया। ■

यूएन–एस्कैप की कार्यकारी सचिव सुश्री अरमिदा सलसिया अलिसजहबाना के साथ संवादात्मक सत्र

संयुक्त राष्ट्र–एस्कैप की कार्यकारी सचिव सुश्री अरमिदा सलसिया अलिसजहबाना ने एक संवादात्मक सत्र के लिए 22 जनवरी, 2019 को आरआईएस का दौरा किया। उसमे प्रो. सचिन चतुर्वेदी, महानिदेशक, आरआईएस ने स्वागत भाषण दिया, जिसके बाद संकाय सदस्यों द्वारा आरआईएस के कार्यकलाप कार्यक्रम पर एक प्रस्तुति दी गई। डॉ. नागेश कुमार, निदेशक, दक्षिण और दक्षिण–पश्चिम एशिया कार्यालय, यूएन–एस्कैप; डॉ. राजन सुदेश रत्न, आर्थिक मामलों के अधिकारी, यूएन–एस्कैप; श्री के.एल. थापर, अध्यक्ष, एशियाई परिवहन विकास संस्थान; और श्री प्रणव कुमार, प्रमुख, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार नीति भी संवादात्मक सत्र में शामिल हुए। ■

संयुक्त राष्ट्र–एस्कैप की कार्यकारी सचिव सुश्री अरमिदा सलसिया अलिसजहबाना आरआईएस में संवादात्मक सत्र में शिरकत करती हुईं।

युवा राजनयिक कॉन्क्लेवः 'भारत–आसियान संबंधों को और मजबूत करना'

आरआईएस ने विजन इंडिया फाउंडेशन (वीआईएफ) के साथ मिलकर 17 जनवरी 2019 को नई दिल्ली में 'युवा राजनयिक कॉन्क्लेव 2.0– भारत–आसियान संबंधों को और मजबूत करने' पर सम्मेलन का आयोजन किया। राजदूत ए.के. बनर्जी, आईएफएस (सेवानिवृत्त) और प्रो. सचिन चतुर्वेदी, महानिदेशक, आरआईएस ने आरंभिक भाषण दिए। 'हिंद–प्रशांत में क्षेत्रीय संरचना को सार्थक स्वरूप प्रदान करने में भारत–आसियान संबंध की भूमिका' पर आयोजित प्रथम सत्र की अध्यक्षता राजदूत अमर सिन्हा, विशिष्ट फेलो, आरआईएस ने की। इस सत्र में श्री संजय पुलिपाका, सीनियर फेलो, एनएमएमएल ने 'हिंद–प्रशांत की गतिशीलता में आसियान की केंद्रीयता' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए और प्रो. हर्ष वी. पंत, किंग्स कॉलेज लंदन ने एक रणनीतिक अवधारणा के रूप में 'चतुष्कोण (क्वाड)' के उद्भव पर संबोधित किया। 'भारत–आसियानः भिन्न, लेकिन संबंधित संस्कृतियों' विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता सुश्री

आरआईएस के महानिदेशक प्रो. सचिन चतुर्वेदी 'युवा राजनयिक कॉन्क्लेव' में अपने विचार व्यक्त करते हुए।

अरुणिमा गुप्ता, वीआईएफ ने की। इंडोनेशिया के दूतावास के राजदूत माननीय श्री सिद्धार्थो रेजा सूर्योदिपुरो ने 'पारस्परिक रूप से लाभकारी संबंध बनाने के लिए अतीत के भारत–इंडोनेशिया संबंधों से लाभ उठाने' विषय पर भाषण दिया। डॉ. गौतम कुमार झा, जेएनयू ने 'भारत–आसियान के सभ्यतागत अंतर्संबंध विषय पर भाषण दिया। श्री राजीव खेर, विशिष्ट फेलो, आरआईएस ने 'आरसीईपी और क्षेत्रीय आर्थिक संरचना–अवसर, चुनौतियां एवं आगे की राह' विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता की। सीआईआई के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार नीति प्रमुख श्री प्रणव कुमार ने 'आसियान के साथ सीमा पार व्यापार को बढ़ावा देने' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। श्री शोभित माथुर, कार्यकारी निदेशक, वीआईएफ ने समापन भाषण दिया। ■

'वित्तीय स्थिरता को बढ़ावा देने में 'वृहद–विवेकपूर्ण नीति' की भूमिका पर संगोष्ठी

आरआईएस और जिंदल स्कूल ऑफ गवर्नमेंट एंड पब्लिक पॉलिसी ने 14 मार्च 2019 को आरआईएस में 'वृहद–विवेकपूर्ण नीति'' पर एक संगोष्ठी आयोजित की। प्रो. सचिन चतुर्वेदी, महानिदेशक, आरआईएस ने स्वागत भाषण दिया। ओ.पी. जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ गवर्नमेंट एंड पब्लिक पॉलिसी के डीन प्रोफेसर आर. सुदर्शन ने आरंभिक भाषण दिया। नेशनल बैंक ऑफ स्लोवाकिया के वृहद–विवेकपूर्ण नीति विभाग के निदेशक श्री मारेक लिसाक ने मुख्य प्रस्तुति दी तथा जिसके बाद परिचर्चा आरंभ हुई। जिसमेंः डॉ. आलोक शील, आरबीआई चेयर प्रोफेसर, आईसीआरआईईआर; श्री लुडोविक ओडोर, वाइस गवर्नर, नेशनल

वृहद–विवेकपूर्ण नीति' पर आयोजित संगोष्ठी में शिरकत करते हुए प्रतिभागी।

बैंक ऑफ स्लोवाकिया; और श्री बंदुला जयसेकरा, विजिटिंग फेलो, आरआईएस ने भाग लिया। माननीय श्री इवान लांसरिक, राजदूत और सुश्री कटरीना तोमकोवा, उप प्रमुख, नई दिल्ली स्लोवाक गणराज्य का दूतावास; और प्रो. बिश्वजीत बनर्जी, मुख्य अर्थशास्त्री, स्लोवाक गणराज्य का वित्त मंत्रालय एवं अर्थशास्त्र के प्रोफेसर, अशोका विश्वविद्यालय ने भी इस अवसर पर अपने विचार रखे। ■

बापा+40 में आरआईएस
शेष पृष्ठ 2 से जारी.....

एप्लीकाडा (आईपीईए), ब्राजील ने की। अन्य पैनल के सदस्यों मे यह भी शामिल थेः डॉ. बर्नाबे मलाकाल्जा, रिसर्च फेलो, राष्ट्रीय वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुसंधान परिषद, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ क्विलमेस (यूएनक्यूब), अर्जेंटीना; श्री गोविंद वेणुप्रसाद, समन्वयक, अफ्रीका के लिए भारतीय व्यापार और निवेश का समर्थन (एसआईटीए), अंतर्राष्ट्रीय व्यापार केंद्र ; सुश्री रोक्साना माजोला, कार्यकारी निदेशक, अध्ययन और नीतिगत विकास केंद्र (सीईडीईपी), ब्यूनस आयर्स विश्वविद्यालय, अर्जेंटीना; और प्रोफेसर टी.सी. जेम्स, विजिटिंग फेलो, आरआईएस।

नेस्ट ने आरआईएस और ब्रिक्स नीतिगत केंद्र, ब्राजील के साथ साझेदारी में ब्राजील, मैक्सिको, चीन, अर्जेंटीना और अफ्रीका के देश प्रभागों (कंट्री चैप्टर) के साथ 22 मार्च 2019 को एसोसियासिएन डी एमिगोस डेल म्यूजियो नेशनल डी बेलास आर्टेस, ब्यूनस आयर्स में 'दक्षिणीय सहयोग की बहुलता' विषय पर एक पैनल परिचर्चा की मेजबानी की। सत्र की शुरुआत यूएनओएसएससी के निदेशक श्री जॉर्ज चेडिएक के विशेष भाषण के साथ हुई। परिचर्चा की सह–अध्यक्षता डॉ. पाउलो एस्टीव्स, निदेशक, ब्रिक्स नीतिगत केंद्र, ब्राजील और प्रोफेसर सचिन चतुर्वेदी, महानिदेशक, आरआईएस ने की। परिचर्चा में शामिल अन्य सदस्य थेः डॉ. एंड्रे डी मेलो ई सूजा, सीनियर रिसर्च फेलो, इंस्टीट्यूटो डी पेसक्विसा इकोनॉमिका एप्लीकाडा (आईपीईए), ब्राजील; डॉ. जॉर्ज ए. पेरेज–पिनेडा, प्रोफेसर–इनवेस्टिगाडोर, यूनिवर्सिडैड एनाहुआक, मेक्सिको; प्रोफेसर मीबो हुआंग, निदेशक, अंतर्राष्ट्रीय विकास सहयोग अकादमी, शंघाई अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय एवं अर्थशास्त्र विश्वविद्यालय; श्रीमती लुआरा लोपेज, दक्षिणीय सहयोग के लिए अनुसंधान समन्वयक, अनुसंधान एवं नीतिगत केंद्र आर्टिकुलाकाओ एसयूएल, ब्राजील; सुश्री नादीन पाइफर, नीतिगत विश्लेषक, ओईसीडी विकास सहयोग निदेशालय, फ्रांस; प्रोफेसर मिलिंदो चक्रबर्ती, विजिटिंग फेलो, आरआईएस; श्री प्रत्यूष शर्मा, संवाददाता (डीसीआर), आरआईएस; और डॉ. ग्लेडिस टेरेसिटा लेचिनी, यूनिवर्सिडैड नेशनल डी रोजारियो, अर्जेंटीना।

'विकास सहयोग समीक्षा' के विशेष अंक के विमोचन अवसर पर प्रतिष्ठित पैनल सदस्य।

'बापा + 40' में आरआईएस का प्रतिनिधित्व प्रो. सचिन चतुर्वेदी, महानिदेशक, आरआईएस ने किया। प्रतिनिधिमंडल में प्रो. टी सी जेम्स, प्रो. मिलिंदो चक्रबर्ती, डॉ. सब्यसाची साहा, श्री प्रणय सिन्हा, सुश्री अमिका बावा और श्री प्रत्युष शर्मा ने किया। प्रो. सचिन चतुर्वेदी ने इन कार्यक्रमों में भी भाग लियाः 'चुनौतियां और दक्षिणीय एवं त्रिकोणीय सहयोग की संस्थागत रूपरेखा को मजबूत करने' पर बापा + 40 संवादात्मक पैनल परिचर्चा 2, जिसे यूएनओएसएससी और अर्जेंटीना सरकार द्वारा आयोजित किया गया; 'दक्षिणीय एवं त्रिकोणीय सहयोग पर सीमांत अनुसंधान को आगे बढ़ाना', जिसे यूएनओएसएससी एवं यूएनडीपी द्वारा आयोजित किया गया; 'सतत विकास की ओर उन्मुखः एजेंडा 2030 को पूरा करने हेतु सहयोग के लिए नए रास्ते', जिसे ओईसीडी विकास केंद्र द्वारा आयोजित किया गया; 'वैश्विक दक्षिण में अंतर्राष्ट्रीय मूल्य श्रृंखला (वैल्यू चेन) का विशेष योगदान', जिसे आईटीसी द्वारा आयोजित किया गया; '2030 एजेंडा प्राप्त करने के लिए विकास सहयोगः प्रभावशील सहयोग' पर संपादकों की कार्यशाला, जिसे नेस्ट, डीआईई और जीडीआई द्व ारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया; '2030 एजेंडा प्राप्त करने के लिए विकास सहयोग' पर विशेषज्ञ कार्यशाला, जिसे नेस्ट, डीआईई, आईपीईए, जर्मन विकास संस्थान और मैनेजिंग ग्लोबल गवर्नेंस द्वारा आयोजित किया गया; और 'सतत विकास लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय विकास सहयोग में होड़ और सहयोग', जिसे नेस्ट, आईपीईए और जीडीआई द्वारा आयोजित किया गया। ■

'वैश्विक दक्षिण में अंतर्राष्ट्रीय मूल्य श्रृंखलाओं के योगदान' पर आईटीसी–आरआईएस रिपोर्ट पेश किए जाने के अवसर पर अनेक प्रतिष्ठित पैनल सदस्य।

एसटीआईपी व्याख्यान श्रृंखला के तहत अनेक आयोजित कार्यक्रम

भारत में विज्ञान संबंधी अभियानों पर पैनल परिचर्चा 10 जनवरी 2019 को आयोजित की गई। प्रो. एम. जगदीश कुमार, कुलपति, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने इसकी अध्यक्षता की। पैनल के सदस्यों में शामिल थेः प्रो. वी. एन. राजशेखरन पिल्लई, स्वदेशी विज्ञान अभियान; डॉ. डी. रघुनंदन, ऑल इंडिया पीपुल्स साइंस नेटवर्क; प्रो. दिनेश अबरोल, दिल्ली विज्ञान मंच और श्री जयंत सहस्रबुद्धे, विभा।

'विज्ञान, प्रौद्योगिकी और समाजः लोगों तक पहुंचने की चुनौती' पर व्याख्यान 15 फरवरी 2019 को प्रो. एम. साईं बाबा, टी. वी. रमन पई, चेयर प्रोफेसर, राष्ट्रीय उन्नत अध्ययन संस्थान, बेंगलुरू द्वारा दिया गया। श्री गौहर रजा, अग्रणी विज्ञान संप्रेषक और पूर्व वैज्ञानिक, सीएसआईआर ने इसकी अध्यक्षता की।

'भारत में सौर ऊर्जा के विकास' पर व्याख्यान 12 मार्च 2019 को डॉ. अरुण कुमार त्रिपाठी, महानिदेशक, राष्ट्रीय सौर ऊर्जा संस्थान (एनआईएसई) द्वारा दिया गया। इसकी अध्यक्षता डॉ. अश्विनी कुमार, वरिष्ठ निदेशक, नवीकरणीय ऊर्जा, ऊर्जा एवं संसाधन संस्थान (टेरी) ने की।

'वैश्विक विकास पर पहल' का शुभारंभ

शेष पृष्ठ 1 से जारी.....

संबंधी सहयोग के एक विविध स्वरूप की स्वीकार्यता के साथ–साथ विकासशील देशों के बीच तरह–तरह के दृष्टिकोणों की मौजूदगी पर आधारित है। यह पहल एशिया और अफ्रीका के साथी विकासशील देशों के साथ भारत के विकास संबंधी अनुभवों को साझा करने के लिए एक उपयुक्त मंच सुलभ कराती है।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता आरआईएस के चेयरमैन राजदूत डॉ. मोहन कुमार ने की। स्वागत भाषण राजदूत अमर सिन्हा, प्रतिष्ठित फेलो, आरआईएस ने दिया। श्री मनोज भारती, अपर सचिव (आर्थिक कूटनीति एवं राज्य प्रभाग), विदेश मंत्रालय, भारत सरकार; श्री पीट वॉवेल्स, निदेशक, एशिया, कैरिबियन एवं विदेशी क्षेत्र प्रभाग, डीएफआईडी; और श्री गेविन मैककिलिव्रे, प्रमुख, डीएफआईडी इंडिया ने विशेष भाषण दिए। प्रोफेसर सचिन चतुर्वेदी, महानिदेशक, आरआईएस ने 'वैश्विक विकास पर पहल' के बारे में एक विशेष प्रस्तुति दी।

इस पहल के आरंभ के बाद 'वैश्विक विकास पर पहल की रूपरेखा' पर एक परिचर्चा राजदूत अमर सिन्हा, विशिष्ट फेलो, की अध्यक्षता में आयोजित की गई। अन्य वक्ता थेः श्री फिलिप परहम, राष्ट्रमंडल में ब्रिटेन के दूत; प्रोफेसर अनुराधा चेनॉय, अध्यक्ष, एफआईडीसी; और डॉ. राजेश टंडन, अध्यक्ष, एशिया में भागीदारी अनुसंधान (प्रिया)। चर्चा के दौरान उभरे कुछ प्रमुख दृष्टिकोण में विकासशील देशों के सभी हितधारकों के बीच संवादों के सह–आयोजन के महत्व पर बल दिया गया। जिसका मुख्य लक्ष्य ज्ञान को जुटाना एवं व्यवस्थित करना और उसे स्थानीय में वैश्विक स्तर पर ले जाना था। परिचर्चा के बाद एक सवाल–जवाब सत्र भी आयोजित किया गया। ■

tyiku lxk"Bh J[kyk

इस श्रृंखला के तहत रेड क्रॉस की अंतर्राष्ट्रीय समिति (आईसीआरसी) के उपाध्यक्ष डॉ. गाइल्स कार्बोनियर ने 9 जनवरी 2019 को आरआईएस में 'विकास मॉडल और मानवीय मुद्दों' पर व्याख्यान दिया। डॉ. यास्मीन अली हक, यूनिसेफ के भारत में प्रतिनिधि, और भारत में संयुक्त राष्ट्र के कार्यवाहक निवासी समन्वयक ने इस संगोष्ठी की अध्यक्षता की। व्याख्यान के बाद आयोजित खुली परिचर्चा में बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने भाग लिया था। ■

'भारतीय चिकित्सा प्रणालियों को बढ़ावा देना: चुनौतियों और सर्वोत्तम प्रथाओं' पर क्षेत्रीय परामर्श

भारतीय पारंपरिक चिकित्सा फोरम (एफआईटीएम) ने 20 मार्च, 2019 को बेंगलुरू में "भारतीय चिकित्सा प्रणालियों को बढ़ावा देने: चुनौतियों और सर्वोत्तम प्रथाओं' पर क्षेत्रीय परामर्श का आयोजन किया था। आयुष मंत्रालय में सचिव वैद्य राजेश कोटेचा ने उद्घाटन भाषण दिया। उद्घाटन सत्र में : श्री राजीव खेर, पूर्व वाणिज्य सचिव एवं विशिष्ट फेलो, आरआईएस; डॉ. बी. आर. रामकृष्ण, कुलपति, एस–व्यास विश्वविद्यालय, बेंगलुरू; और श्री अरविन्द वर्चस्वी, प्रबंध निदेशक, श्री श्री तत्तव, बेंगलुरू विशेष वक्ता थे।

परामर्श के दौरान निम्न चार सत्र अलग–अलग विषयों पर आयोजित किए गए : 'उत्पाद मानक और गुणवत्ता आश्वासन: सफलता एवं चुनौतियां', 'गुणवत्तापूर्ण सेवाएं: मानकीकरण व्यवस्थाएं', 'भारतीय चिकित्सा प्रणालियों का अंतर्राष्ट्रीयकरण: घरेलू तैयारियों के लिए रणनीतियां साझा करना' और 'औषधीय पौधों का गवर्नेंस: संरक्षण और खेती में सर्वोत्तम प्रथाएं।'

परिचर्चा में मुख्य वक्ता थे: श्री प्रमोद कुमार पाठक, अपर सचिव, आयुष मंत्रालय;

आयुष मंत्रालय में सचिव वैद्य राजेश कोटेचा उद्घाटन भाषण देते हुए।

श्री सुधांशु पांडे, अपर सचिव, वाणिज्य विभाग, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, डॉ. बालकृष्ण पिसुपति, अध्यक्ष एवं ट्रस्टी, कानून, पर्यावरण, विकास एवं गवर्नेंस के लिए फोरम (फ्लेज), बेंगलुरू, और श्रीमती मीनाक्षी नेगी, आयुक्त, आयुष विभाग, कर्नाटक। सरकारी अधिकारियों और शिक्षाविदों के अलावा बड़ी संख्या में उद्योग प्रतिनिधियों ने भी इस बैठक में भाग लिया था। विचार–विमर्श के दौरान आयुष क्षेत्र के समक्ष मौजूद चुनौतियों पर प्रकाश डाला गया और इसके साथ ही कई ऐसे कदम भी सुझाए गए जिन्हें सरकार एवं उद्योग जगत को इस क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए उठाने चाहिए। एमएसएमई क्षेत्र से जुड़े मुद्दों पर विशेष रूप से ध्यान दिया गया। परिचर्चा के समापन पर आरआईएस की रिसर्च एसोसिएट डॉ. नम्रता पाठक ने धन्यवाद ज्ञापन किया। ■

'क्या आर्थिक बहुपक्षवाद बचा रह सकता है' पर विशेष चर्चा

श्री जीन पिसानी–फेरी, ब्रसेल्स में स्थापित ब्रूजेल थिंक टैंक के पूर्व संस्थापक एवं प्रमुख और फ्रांसीसी सरकार के नीति नियोजन के पूर्व महाआयुक्त तथा प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद के पूर्व अध्यक्ष के साथ एक परिचर्चा का 8 जनवरी 2019 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर (आईआईसी) में आयोजन किया गया। श्री जीन पिसानी–फेरी ने 'क्या आर्थिक बहुपक्षवाद बचा रह सकता है' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. मोहन कुमार, चेयरमैन, आरआईएस ने इसकी अध्यक्षता की। श्री राजीव खेर, विशिष्ट फेलो, आरआईएस ने मुख्य अतिथि और अन्य प्रतिभागियों का स्वागत किया। प्रतिभागियों में ये अन्य वक्ता भी शामिल थे: डॉ. सुधांशु पांडे, अपर सचिव, वाणिज्य विभाग, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय; डॉ. सुमन बेरी, पूर्व महानिदेशक, एनसीएईआर; डॉ. रामगोपाल अग्रवाल, विशिष्ट फेलो, नीति आयोग; और डॉ. मुकेश भटनागर, डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र। ■

आरआईएस में प्रतिनिधिमंडलों का आगमन

- 16 जनवरी 2019 को एक संवादात्मक सत्र के लिए कनाडा इंडिया फाउंडेशन (सीआईएफ) की अगुवाई में कारोबारी एवं सामुदायिक हस्तियों के एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल का आगमन हुआ।
- 6 फरवरी 2019 को विदेश मंत्रालय में आर्थिक मामलों के ब्यूरो के जापानी प्रतिनिधिमंडल का आगमन हुआ।

fo;ruke ds çfrfufèkeMy us 17 tuojh 2019 dks vkjvkÃ,l fLFkr ,vkÃlh dk nkSjk

वियतनाम राष्ट्रीय विश्वविद्यालय (वीएनयू), सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय के 60 विद्यार्थियों के एक प्रतिनिधिमंडल ने प्रो. डॉ. दू थू हा की अध्यक्षता में 17 जनवरी 2019 को आरआईएस स्थित एआईसी का दौरा किया। प्रो. शंकरी सुंदररमन, हिंद–प्रशांत अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) ने परिचर्चा की शुरुआत की थी। श्री एम. सी. अरोड़ा, निदेशक (एएंडएफ), आरआईएस ने इस दौरान आरआईएस के विभिन्न कार्यकलापों का अवलोकन प्रस्तुत किया था। आरआईएस स्थित एआईसी के समन्वयक डॉ. प्रबीर डे ने भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीति और भारत–आसियान संबंधों पर एक प्रस्तुति दी थी। इसके बाद सवाल–जवाब सत्र आयोजित किया गया। ■

eaxksfy;k ds ehfM;k çfrfufèkeMy dk 1 ekpZ 2019 dks vkjvkÃ,l fLFkr ,vkÃlh esa vkxeu

मंगोलिया के मीडिया प्रतिनिधिमंडल के लगभग 20 सदस्यों का आरआईएस स्थित एआईसी में 1 मार्च 2019 को आगमन हुआ था। डॉ. प्रबीर डे ने 'भारत–मंगोलिया संबंधों' पर एक प्रस्तुति दी, जिसके बाद प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों के साथ बातचीत हुई। 'भारत और मंगोलिया के बीच बढ़ते आर्थिक संबंध' शीर्षक वाली पुस्तक की एक प्रति भी प्रतिनिधिमंडल के प्रमुख को पेश की गई। ■

bMksusf'k;k ds çfrfufèkeMy us 28 Qjojh 2019 dks vkjvkÃ,l fLFkr ,vkÃlh dk nkSjk

इंडोनेशिया के विदेश मंत्रालय के दो सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 28 फरवरी 2019 को आरआईएस स्थित एआईसी का दौरा किया। यह दौरा इंडोनेशिया के हिंद–प्रशांत कार्यक्रम पर चर्चा करने और हिंद–प्रशांत क्षेत्र में भारत की कनेक्टिविटी संबंधी पहलों को समझने से जुड़ा हुआ था। प्रतिनिधिमंडल की दो सदस्य ये थीं: सुश्री अर्नावती, दक्षिण एवं मध्य एशिया के लिए उप निदेशक, नीतिगत विकास एवं विश्लेषण एजेंसी, इंडोनेशिया गणराज्य का विदेश मंत्रालय और सुश्री इदा हुमैदाह, सहायक उप निदेशक, नीतिगत विश्लेषण एवं विकास एजेंसी, इंडोनेशिया गणराज्य का विदेश मंत्रालय। डॉ. प्रबीर डे ने भारत–आसियान आर्थिक संबंधों और भारत की कनेक्टिविटी पहलों पर एक प्रस्तुति दी। ■

दक्षिण अफ्रीका की उप अंतर्राष्ट्रीय संबंध मंत्री माननीया सुश्री रेगिना मैकगाबो महाउले....
पृष्ठ 3 से जारी.....

में आजादी के 25 साल' विषय पर संबोधित किया। दक्षिण अफ्रीका के इतिहास, महात्मा गांधी एवं नेल्सन मंडेला के दौर से ही भारत के साथ इसकी साझेदारी और विकासशील देशों में समावेशी विकास सुनिश्चित करने की दिशा में दोनों देशों की बढ़ती भूमिका पर प्रकाश डाला। देशों के बीच सहयोग से जुड़े मौजूदा बहुपक्षीय फोरमों को प्रेरित किया और इसके साथ ही आरआईएस एवं इसके दक्षिण अफ्रीकी समकक्षों एसएआईआईए और आईजीडी के बीच सहमति पत्रों (एमओयू) पर हस्ताक्षर के परिणामस्वरूप गहन सहयोग की संभावनाओं के बारे में उन्होनें विस्तार से चर्चा की।

अंत में भारत में दक्षिण अफ्रीका के उच्चायोग के कार्यवाहक राजदूत श्री बी.जे. जौबर्ट ने धन्यवाद ज्ञापन किया। ■

'विज्ञान राजनय' पर आरआईएस–आईटेक कार्यक्रम

विज्ञान कूटनीति पर आईटीईसी के क्षमता निर्माण हेतु कार्यक्रम के प्रतिभागी।

'विज्ञान राजनय' पर आईटेक–आरआईएस क्षमता निर्माण कार्यक्रम 7–18 जनवरी 2019 के दौरान आयोजित किया गया। 25 देशों के 35 प्रतिभागियों ने इस पाठ्यक्रम में सक्रिय भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान निम्नलिखित विषयों को शामिल किया गया: विज्ञान राजनय का परिचय: अवधारणाएं एवं रूपरेखा; विज्ञान राजनय में अनुभव साझा करना; जैव प्रौद्योगिकी एवं जैव विविधता; जलवायु परिवर्तन; सांस्कृतिक यात्रा; डिजिटल इकोनॉमी व उभरती प्रौद्योगिकियां; प्रौद्योगिकी, व्यापार एवं विज्ञान राजनय; और एसडीजी एवं दक्षिणीय सहयोग। कार्यक्रम की शुरुआत आरआईएस के महानिदेशक प्रोफेसर सचिन चतुर्वेदी के स्वागत भाषण के साथ हुई। प्रो. के. विजय राघवन, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार, भारत सरकार ने प्रतिभागियों को संबोधित किया। डॉ. भास्कर बालाकृष्ण, विज्ञान राजनय फेलो, आरआईएस एवं पूर्व भारतीय राजनयिक और डॉ. पूर्णिमा रूपल, निदेशक, सीईएफआईपीआरए ने भी वक्तव्य दिए। समापन सत्र 18 जनवरी 2019 को आयोजित किया गया जिस दौरान श्री दिनकर अस्थाना, अपर सचिव (डीपीएआईआई), विदेश मंत्रालय ने प्रतिभागियों को संबोधित किया। तथा इसके बाद प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। ■

अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों और विकास नीति पर आरआईएस–आईटेक कार्यक्रम

अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों और विकास नीति (आईईआईडीपी) पर आईटीईसी के क्षमता निर्माण कार्यक्रम के कई प्रतिभागी।

'अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों और विकास नीति (आईईआईडीपी)' पर आईटेक क्षमता निर्माण कार्यक्रम 11 फरवरी से 8 मार्च 2019 के दौरान आयोजित किया गया। 20 देशों के मध्यम स्तर के सरकारी अधिकारियों/राजनयिकों, नीति से जुड़े प्रोफेशनलों और विद्वानों सहित 30 प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया। कार्यक्रम के मुख्य विषय थे: व्यापार एवं वित्त पर वैश्विक संस्थागत संरचना, क्षेत्रीय गतिशीलता, आर्थिक एकीकरण एवं विकास सहयोग; बुनियादी ढांचे का वित्तपोषण: विकासशील देशों एवं अर्थव्यवस्था के लिए अनिवार्यताएं; और समाज, साझेदारियां और संस्कृति: भारतीय परिप्रेक्ष्य। जाने–माने भारतीय विशेषज्ञों ने इन मुद्दों के विभिन्न आयामों पर व्यापक दृष्टिकोण पेश किया।

कार्यक्रम की शुरुआत प्रोफेसर सचिन चतुर्वेदी, महानिदेशक, आरआईएस के स्वागत भाषण के साथ हुई। श्री जे.एस. मुकुल, डीन, विदेश सेवा संस्थान (एफएसआई) ने आरंभिक भाषण दिया। समापन सत्र की अध्यक्षता आरआईएस के चेयरमैन डॉ. मोहन कुमार ने की। सुश्री नगमा एम. मल्लिक, संयुक्त सचिव (पीपी एंड आर), विदेश मंत्रालय ने समापन भाषण दिया। इस अवसर पर प्रतिभागियों नें इन मुद्दों पर प्रस्तुतियां दी: एसडीजी एवं सार्वजनिक नीति पर समूह 1: सुश्री करीना मारिएला जरा तामायो (इक्वाडोर) ; बुनियादी ढांचे/कनेक्टिविटी/नवीकरणीय ऊर्जा पर समूह 2: श्रीमती मीनाक्षी डाबी हौजैरी (मॉरीशस) ; व्यापार (व्यापार संतुलन एवं पूंजी प्रवाह पर एफटीए का असर) पर समूह 3: श्री मोसेस लुफुके (तंजानिया) ; जी 20 / ब्रिक्स पर समूह 4: श्री हेल्डर पाउलो मचाडो सिल्वा (ब्राजील) ; व्यापार (व्यापार में विकासशील देशों की सौदेबाजी क्षमता) पर समूह 5 : श्री टेस्फेय अयालेव मेकोनेन (इथियोपिया); और अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संरचना, विकास वित्त एवं वैश्विक कर मुद्दों पर समूह 6: डॉ. हेबैतल्लाह हनाफी महमूद एडम (मिस्र)। ■

अन्य मंचों पर नीतिगत संवाद

प्रो. सचिन चतुर्वेदी

महानिदेशक

- 7 जनवरी 2019 को नई दिल्ली में ऊर्जा फोरम में कनाडा के पूर्व प्रधानमंत्री माननीय स्टीफन हार्पर और केंद्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस और कौशल विकास व उद्यमिता मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान के साथ एक गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया।
- 8 जनवरी 2019 को नई दिल्ली में प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद द्वारा नीली अर्थव्यवस्था पर भारत–नार्वे संयुक्त कार्यबल की पहली बैठक के दौरान 'स्वच्छ और स्वस्थ महासागरों को कैसे सुनिश्चित करें' विषय पर आयोजित परिचर्चा में पैनल सदस्य थे।
- 11 जनवरी 2019 को ह्यूस्टन में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) द्वारा आयोजित ह्यूस्टन–भारत सम्मेलन के तीसरे संस्करण में 'लोकतंत्र को परिपूर्ण करना: गवर्नेंस पर फोकस' पर एक प्रस्तुति दी।
- 3 फरवरी 2019 को गुवाहाटी में इंडिया फाउंडेशन द्वारा आयोजित दूसरे आसियान–भारत युवा शिखर सम्मेलन में 'भौतिक कनेक्टिविटी'' पर एक प्रस्तुति दी।
- 11 फरवरी 2019 को नई दिल्ली में शहीद भगत सिंह कॉलेज के अर्थशास्त्र विभाग द्वारा 'भूमंडलीकरण बनाम राष्ट्रवाद: अमेरिका–चीन व्यापार युद्ध और भारत' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'व्यापार युद्ध: भारत के लिए चुनौतियां और अवसर' पर एक प्रस्तुति दी।
- 12 फरवरी 2019 को बैंकॉक में संयुक्त राष्ट्र एस्कैप द्वारा आयोजित बापा + 40 की तैयारी से जुड़ी क्षेत्रीय तकनीकी कार्यशाला में 'वैचारिक रूपरेखा: भारतीय परिप्रेक्ष्य' पर एक प्रस्तुति दी।
- 15 फरवरी 2019 को सियोल में केडीआई स्कूल और जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (जेआईसीए) – अनुसंधान संस्थान (आरआई) द्वारा सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) पर संयुक्त रूप से आयोजित सम्मेलन में 'एसडीजी के लिए एसटीआई का उपयोग करने' पर एक प्रस्तुति दी।
- 26 फरवरी, 2019 को नई दिल्ली में इंडिया फाउंडेशन द्वारा आयोजित कौटिल्य फेलो कार्यक्रम में 'भारत में थिंक टैंक और सिविल सोसायटी की भूमिका' पर एक प्रस्तुति दी।
- 26 फरवरी 2019 को नई दिल्ली में एनएएसपीएए और जिंदल स्कूल ऑफ गवर्नमेंट एंड पब्लिक पॉलिसी तथा ओ. पी. जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी द्वारा 'असमानता के युग में गवर्नेंस: दक्षिण एशिया में नीति प्रोफेशनलों की अगली पीढ़ी को प्रशिक्षित करना' विषय पर आयोजित संयुक्त सम्मेलन में पैनल सदस्य थे।
- 5 मार्च 2019 को नई दिल्ली में आईसीएसएसआर–ईएसआरसी, ब्रिटेन द्वारा 'बदलते वैश्विक परिवेश में ब्रिटेन–भारत व्यापार और सीमा पार निवेश का भविष्य' विषय पर संयुक्त रूप से आयोजित कार्यशाला की अध्यक्षता की।
- 6 मार्च 2019 को फरीदाबाद में यूनेस्को द्वारा 'प्रभावकारी एवं समावेशी विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार नीतियों को विकसित करने' विषय पर आयोजित एसटीआई क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला में 'प्रभावकारी एवं समावेशी विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार नीतियों के विकास' पर विशेष भाषण दिया।
- 8 मार्च 2019 को नई दिल्ली में 'वैश्विक आर्थिक रुझान और भारत–जापान आर्थिक साझेदारी' पर आयोजित 9वीं आईसीआरआईईआर–पीआरआई कार्यशाला में 'जापान की जी–20 अध्यक्षता और भारत–जापान सहयोग के लिए संभावित क्षेत्रों' पर सत्र की अध्यक्षता की।
- 18 मार्च 2019 को ब्यूनस आयर्स में नेस्ट, डीआईई और जीडीआई द्वारा संयुक्त रूप से '2030 एजेंडा प्राप्त करने के लिए सहयोग: प्रभावशील सहयोग' विषय पर आयोजित संपादकों की कार्यशाला में भाग लिया।
- 19 मार्च 2019 को ब्यूनस आयर्स में यूएनओएसएसी और यूएनडीपी द्वारा 'दक्षिणीय और त्रिकोणीय सहयोग पर सीमांत अनुसंधान को आगे बढ़ाना' विषय पर आयोजित परिचर्चा का संचालन किया।
- 19 मार्च 2019 को ब्यूनस आयर्स में नेस्ट, डीआईई, आईपीईए, जर्मन विकास संस्थान और मैनेजिंग ग्लोबल गवर्नेंस द्वारा '2030 एजेंडा हासिल करने के लिए विकास सहयोग' पर आयोजित विशेषज्ञ कार्यशाला में भाग लिया।
- 20 मार्च 2019 को ब्यूनस आयर्स में ओईसीडी द्वारा 'सतत विकास की ओर उन्मुख: एजेंडा 2030 को पूरा करने हेतु सहयोग के लिए नए रास्ते' विषय पर अलग से आयोजित कार्यक्रम के दौरान 'अंतर्राष्ट्रीय सहयोग में व्यापक बदलाव के लिए नए साधन और दृष्टिकोण' पर एक प्रस्तुति दी।
- 21 मार्च 2019 को ब्यूनस आयर्स में नेस्ट, आईपीईए और जीडीआई द्वारा 'सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय विकास सहयोग में होड़ और सहयोग' विषय पर आयोजित अलग से कार्यक्रम में भाग लिया।
- 21 मार्च 2019 को ब्यूनस आयर्स में यूएनओएसएससी और अर्जेंटीना सरकार द्वारा आयोजित दक्षिणीय सहयोग पर दूसरे उच्चस्तरीय संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (बापा +40) में 'चुनौतियां और दक्षिणीय एवं त्रिकोणीय सहयोग की संस्थागत रूपरेखा को मजबूत करने' पर 'बापा+40: संवादात्मक पैनल परिचर्चा 2' में पैनल सदस्य थे।
- 21 मार्च 2019 को ब्यूनस आयर्स में आईटीसी द्वारा 'वैश्विक दक्षिण में अंतर्राष्ट्रीय मूल्य श्रृंखला का विशेष योगदान' विषय पर अलग से आयोजित कार्यक्रम के दौरान 'बापा से बापा+40 तक: दक्षिणीय व्यापार और निवेश में भारत का योगदान' विषय पर एक प्रस्तुति दी।
- 28 मार्च 2019 को नई दिल्ली में आईडीएसए द्वारा आयोजित 20वें एशियाई सुरक्षा सम्मेलन में 'ब्रिक्स का भविष्य – एक भारतीय परिप्रेक्ष्य' पर एक प्रस्तुति दी।

प्रो. एस.के. मोहंती

- विदेश मंत्रालय में 8 जनवरी 2019 को नई दिल्ली में 'हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (आईओआरए)' पर आयोजित परिचर्चा बैठक में भाग लिया।
- नई दिल्ली में 10 जनवरी, 2019 को वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय में 'राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की सरकारों के साथ संवाद' पर आयोजित परिचर्चा बैठक में भाग लिया और 'व्यापार विकास एवं संवर्धन परिषद: बेहतर दक्षता के लिए सुझाव' पर एक प्रस्तुति दी।
- नई दिल्ली में 21 जनवरी 2019 को पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय में 'हिंद–प्रशांत के विशेष संदर्भ के साथ तटीय अनुसंधान में प्रगति' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए आयोजित संचालन समिति की वीडियो कांफ्रेंसिंग बैठक में भाग लिया।

- नई दिल्ली में 22 जनवरी 2019 को पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय में प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद द्वारा आयोजित 'नीली अर्थव्यवस्था कार्य समूहः 1 (नीली अर्थव्यवस्था और महासागर के गवर्नेंस के लिए राष्ट्रीय लेखांकन रूपरेखा)' की औपचारिक बैठक में भाग लिया और फिर उसी विषय पर एक प्रस्तुति भी दी।
- नई दिल्ली में 31 जनवरी 2019 और 19 फरवरी 2019 को पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय में प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद द्वारा आयोजित 'नीली अर्थव्यवस्था कार्य समूहः 1 (नीली अर्थव्यवस्था और महासागर के गवर्नेंस के लिए राष्ट्रीय लेखांकन रूपरेखा)' की परिचर्चा बैठक में भाग लिया।
- नई दिल्ली में 21 फरवरी 2019 और 26 मार्च 2019 को वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के वाणिज्य विभाग में 'एलएसी अध्ययन' पर आयोजित परिचर्चा बैठकों में भाग लिया।
- 25 फरवरी 2019 को नई दिल्ली में नीति आयोग द्वारा 'राष्ट्रीय समुद्री नीति' पर आयोजित परिचर्चा बैठक में भाग लिया।
- 7–9 मार्च 2019 को महाबलीपुरम, चेन्नई में ऊर्जा एवं संसाधन संस्थान (टेरी) और कोनराड–एडेनेउर–स्टिफटंग (केएएस) द्वारा मद्रास प्रबंधन संघ (एमएमए) के सहयोग से 'उभरती वैश्विक समुद्री व्यवस्था – भारत की रणनीति' पर आयोजित पांचवें टेरी–केएएस संसाधन संवाद में भाग लिया।
- 26 मार्च, 2019 को नई दिल्ली में भारत अरब सांस्कृतिक केंद्र, जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय द्वारा 'भारत, चीन और अरब दुनियाः नई गतिशीलता की तलाश करने' पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।
- 26 मार्च, 2019 को नई दिल्ली में भारत अरब सांस्कृतिक केंद्र, जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय द्वारा 'भारत, चीन और अरब दुनियाः नई गतिशीलता की तलाश करने' पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान अरब दुनिया में भारत और चीन पर एक प्रस्तुति दी।
- नई दिल्ली में 26 मार्च 2019 को वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के वाणिज्य विभाग में 'एलएसी अध्ययन' पर आयोजित परिचर्चा बैठक में भाग लिया।
- नई दिल्ली में 27 मार्च 2019 को विदेश मंत्रालय में 'हिंद महासागर रिम संघ (आईओआरए) के तहत भारत की पहल – 25वां हिंद महासागर रिम शैक्षणिक समूह (आईओआरए जी) पर आयोजित परिचर्चा बैठक, छठे हिंद महासागर संवाद (आईओडी) और आईओआरए में शैक्षणिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्राथमिकता क्षेत्र पर विशेषज्ञों की बैठक' में भाग लिया।

श्री राजीव खेर

विशिष्ट फेलो

- नई दिल्ली में 12 जनवरी 2019 को सीटीआईएल द्वारा 'डब्ल्यूटीओ में नई जान फूंकने' पर आयोजित परिचर्चा बैठक में एक पैनलिस्ट के रूप में भाग लिया।
- 16 जनवरी 2019 को नई दिल्ली में आईसीआरआईईआर द्वारा 'भारत–आसियान आर्थिक संबंध और क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी (आरसीईपी) के लिए निहितार्थ' पर आयोजित गैर–सार्वजनिक कार्यशाला की अध्यक्षता की।
- 18 जनवरी, 2019 को नई दिल्ली में भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी) के डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र में 'वैश्विक व्यापार की बदलती गतिशीलता' विषय पर आईटीईसी प्रतिभागियों के समक्ष एक व्याख्यान दिया।
- 22 जनवरी 2019 को नई दिल्ली में वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय द्वारा आयोजित उच्चस्तरीय सलाहकार समूह (एचएलएजी) की बैठक में एक सदस्य के रूप में भाग लिया।
- 25 जनवरी 2019 को पुणे में किर्लोस्कर ब्रदर्स लिमिटेड के निदेशक मंडल की बैठक में अतिरिक्त निदेशक के रूप में भाग लिया।
- जकार्ता में 29–30 जनवरी 2019 को जापान विदेश व्यापार संगठन (जेट्रो) और आसियान एवं पूर्वी एशिया के आर्थिक अनुसंधान संस्थान (ईआरआईए) द्वारा 'डिजिटल अर्थव्यवस्थाओं के नए वैश्विक युग' पर संयुक्त रूप से आयोजित गोलमेज परिचर्चा में भाग लिया।
- 13 फरवरी 2019 को नई दिल्ली में आईसीआरआईईआर द्वारा 'एशिया 2050: चीन, भारत और जापान के लिए निहितार्थों की तलाश करने' पर आयोजित सेमिनार में एक प्रतिभागी के रूप में भाग लिया।
- 16 फरवरी 2019 को देहरादून में डीआईटी विश्वविद्यालय द्वारा 'विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, वाणिज्य और समाज (एसटीसीएस 2019)' पर आयोजित सम्मेलन में एक पैनल सदस्य के रूप में भाग लिया।
- नई दिल्ली में 21 फरवरी 2019 को नीति आयोग द्वारा 'भारत से वाणिज्यिक निर्यात योजना (एमईआईएस)' की समीक्षा करने के लिए आयोजित बैठक में भाग लिया।
- 5 मार्च 2019 को नई दिल्ली में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा 'ब्रिटेन–भारत व्यापार का भविष्य और बदलते वैश्विक परिवेश में सीमा पार निवेश' पर आयोजित कार्यशाला में 'भारत–ब्रिटेन द्विपक्षीय व्यापार और निवेश की संभावनाओं' पर एक प्रस्तुति दी।
- कोच्चि में 7 मार्च से 9 मार्च 2019 तक ट्रू नॉर्थ द्वारा आयोजित 'पथान्वेषी I कारोबारी हस्ती सम्मेलन I 2019' में भाग लिया।
- नई दिल्ली में 25 मार्च 2019 को आईसीआरआईईआर द्वारा डेटा कैटलिस्ट के साथ '"डिजिटल अर्थव्यवस्था का भविष्यः उभरती व्यवस्थाओं में परस्पर विरोधी हालात' पर आयोजित सम्मेलन में भाग लिया।

आरआईएस के विशिष्ट फेलो श्री राजीव खेर 27 मार्च 2019 को नई दिल्ली में पीएचडी वाणिज्य एवं उद्योग मंडल द्वारा 'निर्यात वृद्धि में नई जान फूंकने 'विषय पर आयोजित खुली परिचर्चा में प्रतिनिधियों को संबोधित किया।

- 27 मार्च 2019 को नई दिल्ली में पीएचडी वाणिज्य एवं उद्योग मंडल द्वारा 'निर्यात वृद्धि में नई जान फूंकने' विषय पर आयोजित खुली परिचर्चा में उपस्थित प्रतिनिधियों को संबोधित किया।

प्रो. अमिताभ कुंडू

विशिष्ट फेलो

- 31 जनवरी 2019 को नई दिल्ली में रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित "मानव विकास" पर मुख्य भाषण दिया।
- 8 फरवरी 2019 को नई दिल्ली में न्यूपा द्वारा 'शिक्षा में समानता' विषय पर आयोजित कुलपति कार्यशाला में एक व्याख्यान दिया।
- एक सलाहकार के रूप में 15 फरवरी 2019 को वन और पर्यावरण मंत्रालय द्वारा आयोजित एक सत्र की अध्यक्षता की और 'वानिकी क्षेत्र के लिए राज्यों को वित्त आयोग द्वारा हस्तांतरण पर सिफारिशें' (आईआईएफएम भोपाल अध्ययन) विषय पर एक प्रस्तुति दी।
- 22 फरवरी 2019 को नई दिल्ली में 'स्वच्छ भारत मिशन' पर स्थायी समिति की बैठक और इसके द्वारा किए गए विचार–विमर्श की अध्यक्षता की।
- अलीगढ़ में 23 फरवरी 2019 को अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय द्वारा 'बजट और महिला–पुरुष समावेशी शहरी विकास के लिए प्रेरित करना' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में व्याख्यान दिया।
- 25 फरवरी 2019 को नई दिल्ली में अमेरिका इंडिया फाउंडेशन द्वारा आयोजित संगोष्ठी में 'प्रवासी बच्चों की शिक्षा' पर मुख्य भाषण दिया।
- 28 फरवरी 2019 को नई दिल्ली में प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय द्वारा 'प्रकृति, संस्कृति और भविष्य को व्यवस्थित करना' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य भाषण दिया।
- 9 मार्च 2019 को नैनीताल में कुमाऊं विश्वविद्यालय द्वारा 'समकालीन भारत में ग्रामीणों की व्यथाः निहितार्थ और चुनौतियां' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में आरंभिक भाषण दिया।
- 13 मार्च 2019 को कोलकाता में जादवपुर विश्वविद्यालय द्वारा 'भारत में सामाजिक और क्षेत्रीय विकासः उभरते नीतिगत मुद्दे' विषय पर आयोजित सम्मेलन में विशेष व्याख्यान दिया।
- 14 मार्च 2019 को नई दिल्ली में मानव संसाधन विकास केंद्र, जामिया मिलिया इस्लामिया द्वारा आयोजित 'समावेशी शिक्षा' पर शिक्षाविदों के लिए नेतृत्व कार्यक्रम (लीप) में एक विशेष व्याख्यान दिया।
- 16 मार्च 2019 को नई दिल्ली में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा 'जल निरंतरता आजीविका और जलवायु परिवर्तन' विषय पर आयोजित 40वीं भारतीय भूगोलवेत्ता बैठक एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में समापन भाषण दिया।
- 26 मार्च 2019 को मुंबई में टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज द्वारा 'भारत में पारस्परिकता, धार्मिक अल्पसंख्यक और महिलाओं का विकास' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में आरंभिक भाषण दिया।
- 28 मार्च 2019 को चंडीगढ़ में पोस्ट ग्रैजुएट गवर्नमेंट कॉलेज फॉर गर्ल्स द्वारा 'भारत में अनौपचारिक रोजगारः मुद्दे और चुनौती' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य भाषण दिया।
- 29 मार्च 2019 को नई दिल्ली में विश्व संसाधन संस्थान द्वारा 'उपनगरीकरण का प्रबंधन' विषय पर आयोजित परिचर्चा में एक पैनल सदस्य के रूप में भाग लिया।

प्रो. टी. सी. जेम्स

विजिटिंग फेलो

- 19 जनवरी, 2019 को एम. डी. विश्वविद्यालय, रोहतक द्वारा आयोजित राष्ट्रीय आईपीआर सम्मेलन में 'कॉपीराइट और साहित्यिक चोरी' विषय पर एक व्याख्यान दिया।
- 30 जनवरी 2019 को दक्षिण अफ्रीका के प्रिटोरिया में 'जी20 और अफ्रीकाः जी20 के लिए अफ्रीकी प्राथमिकताओं का मार्गनिर्देशन करने' पर आयोजित टी20 अफ्रीकी स्थायी समूह की बैठक में भाग लिया और अफ्रीका में सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं जी20 पर नीतिगत सार–पत्र प्रस्तुत किया।
- 11 फरवरी, 2019 को नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में राष्ट्रीय सम्मेलन और यूनानी दिवस समारोह के दौरान 'सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए सतत विकास लक्ष्यः पारंपरिक चिकित्सा की भूमिका' विषय पर मुख्य भाषण दिया।
- 27 फरवरी 2019 को कोचीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय द्वारा 'कॉपीराइट के भविष्य' पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय विचार मंथन सत्र में एक पैनलिस्ट थे और 'कॉपीराइट रचनाओं तक पहुंच और सिमटता पब्लिक डोमेनः वाणिज्यिक प्रथाओं' पर एक प्रस्तुति दी।
- 30 मार्च, 2019 को किशनगढ़ के श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज में बौद्धिक संपदा अधिकारों के बारे में जागरुकता और प्रशिक्षण कार्यक्रम पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में 'बौद्धिक संपदा अधिकारों और इसके विभिन्न आयामों' पर मुख्य भाषण दिया।

डॉ. पी. के. आनंद

विजिटिंग फेलो

- 18 जनवरी 2019 को टेरी में 'ग्रामीण सड़कें और एसडीजीः इंजीनियरिंग के लिए छोटे हो सकते हैं, लेकिन क्षमता की दृष्टि से अवश्य ही बड़े हैं' शीर्षक वाले पेपर पर चर्चा करने के लिए आयोजित गोलमेज कार्यशाला में भाग लिया।
- नई दिल्ली में 15 फरवरी 2019 को आईआईटी, दिल्ली के सहयोग से नीति आयोग, एआईसीटीई, एसटीपीआई, ग्रामीण/अर्ध–शहरी क्षेत्रों के युवाओं के आर्थिक समावेशन की नीतिगत योजना के साथ राष्ट्रीय युवा सहकारी सोसायटी (एनवाईसीएस) द्वारा आयोजित 'रिसर्जेंट इंडिया युवा कॉन्क्लेव – 2019 'सम्मेलन में भाग लिया।
- टेरी द्वारा 20 फरवरी 2019 को आयोजित 'भूमि अधिग्रहण, पुनर्वास और पुनर्स्थापन अधिनियम में उचित मुआवजे के अधिकार एवं पारदर्शिता पर प्रशिक्षण' के उद्घाटन सत्र में एक वक्ता के रूप में भाग लिया।
- 15 मार्च, 2019 को नई दिल्ली में महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (डब्ल्यूसीडी) और अन्य हितधारकों द्वारा कृषि–पोषण पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और एक प्रस्तुति दी।
- प्रौद्योगिकी सुविधा व्यवस्था के समुचित संचालन के लिए एसटीआई संबंधी यूएनईएस वैश्विक पायलट कार्यक्रम की तैयारी बैठक हेतु एसडीजी की रूपरेखा के लिए 19 मार्च 2019 को नई दिल्ली में प्रधानमंत्री के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार (पीएसए) की अध्यक्षता में विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार (एसटीआई) पर आयोजित बैठक में भाग लिया।

- 26 मार्च 2019 को आईसीएमआर और राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय द्वारा "गांधी एवं स्वास्थ्य / 150 – आईसीएमआर की सदी–भर की यात्रा के निशान ' विषय पर आयोजित आईसीएमआर संगोष्ठी में भाग लिया।

श्री कृष्ण कुमार

विजिटिंग फेलो

- 15 मार्च, 2019 को नई दिल्ली में महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (डब्ल्यूसीडी) और अन्य हितधारकों द्वारा 'कृषि–पोषण' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में एक प्रस्तुति दी।
- प्रौद्योगिकी सुविधा व्यवस्था के समुचित संचालन के लिए एसटीआई संबंधी यूएनईएस वैश्विक पायलट कार्यक्रम की तैयारी बैठक हेतु एसडीजी की रूपरेखा के लिए 19 मार्च 2019 को पृथ्वी भवन, नई दिल्ली में प्रधानमंत्री के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार (पीएसए) की अध्यक्षता में विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार (एसटीआई) पर आयोजित बैठक में भाग लिया।

डॉ. के. रवि श्रीनिवास

विजिटिंग फेलो

- 8 मार्च 2019 को जैव प्रौद्योगिकी के लिए क्षेत्रीय केंद्र (आरसीबी), फरीदाबाद में 'प्रभावकारी एवं समावेशी विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार नीतियों को विकसित करना' विषय पर क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला (यूनेस्को, यूआईएस और आरसीबी द्वारा आयोजित) में 'विज्ञान कूटनीति' पर एक व्याख्यान दिया।

डॉ. सब्यसाची साहा

सहायक प्रोफेसर

- 23 जनवरी 2019 को जापान के टोक्यो में कार्यदल के सदस्य के रूप में व्यापार, निवेश और वैश्वीकरण पर टी20 जापान कार्यदल 8 की बैठक में भाग लिया और 'एक वार्ता फोरम के रूप में विश्व व्यापार संगठन में नई जान फूंकने' एवं 'सतत और समावेशी विकास के लिए वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं का विस्तार व पुनर्गठन करने' से जुड़े नीतिगत सार–पत्रों पर हुए विचार–विमर्श में योगदान दिया।
- 15 फरवरी 2019 को आईआईटी दिल्ली के हौज खास कैम्पस, नई दिल्ली में राष्ट्रीय युवा सहकारी समिति (एनवाईसीएस) लिमिटेड द्वारा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली के सहयोग से आयोजित 'रिसर्जेंट इंडिया युवा कॉन्क्लेव – 2019' में वक्ता थे और इसके साथ ही सत्र के दौरान 'छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में अवसर सृजित करना: कृषि एवं उससे परे' विषय पर व्याख्यान दिया।
- 20 मार्च 2019 को अर्जेंटीना के ब्यूनस आयर्स में ब्रिक्स नीतिगत केंद्र; डीसीडी / ओईसीडी; डीआईई; आरआईएस द्वारा आयोजित दक्षिणीय सहयोग पर दूसरे उच्चस्तरीय संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (बापा + 40) के दौरान '2030 एजेंडा प्राप्त करने के लिए गैर– सरकारी निकायों की सेवाएं लेना: दक्षिणीय और त्रिकोणीय सहयोग से सबक' विषय पर अलग से आयोजित कार्यक्रम में पैनल सदस्य थे।
- 21 मार्च 2019 को अर्जेंटीना के ब्यूनस आयर्स में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार केंद्र (आईटीसी), जिनेवा और आरआईएस द्वारा 'वैश्विक दक्षिण में अंतर्राष्ट्रीय मूल्य श्रृंखलाओं का योगदान' विषय पर आयोजित दक्षिणीय सहयोग पर दूसरे उच्चस्तरीय संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (बापा+40) में भाग लिया। 'वैश्विक दक्षिण के पुनरुत्थान' विषय पर आरआईएस टीम द्वारा योगदान किए गए अध्याय के प्रमुख निष्कर्षों पर प्रस्तुति दी।
- बैंकॉक में 28 मार्च 2019 को 'दक्षिण एशिया में एसडीजी: एक क्षेत्रीय रूपरेखा की तलाश में' विषय पर आयोजित विचार मंथन कार्यशाला में भाग लिया ('एसडीजी: उभरते भारतीय अनुभव' पर प्रस्तुति दी)।

डॉ. प्रियदर्शी दाश

सहायक प्रोफेसर

- 29–30 जनवरी, 2019 को दक्षिण अफ्रीका के प्रिटोरिया में टी20 जापान अफ्रीका कार्यदल की बैठक में भाग लिया।
- 6–7 मार्च, 2019 को जेएनयू स्थित आंतरिक एशिया अध्ययन केंद्र में 'गंगा से वोल्गा: आंतरिक एशिया के साथ भारत के जुड़ाव' पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 'भारत और आंतरिक एशिया के बीच बेहतर आर्थिक संबंधों के वाहक : व्यापार, निवेश और कनेक्टिविटी' विषय पर प्रस्तुति दी।
- 14–15 मार्च, 2019 को सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक द्वारा 'बिम्सटेक में नई जान फूंकना: सांस्कृतिक और आर्थिक एकीकरण के माध्यम से शांति को बढ़ावा देना' पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 'बिम्सटेक में वित्तीय क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा देना' विषय पर प्रस्तुति दी।
- 25–26 मार्च 2019 को भारत–अरब सांस्कृतिक केंद्र, जामिया मिलिया इस्लामिया द्वारा 'भारत, चीन और अरब विश्व: नई गतिशीलता की तलाश' पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में 'तेल व्यापार से परे भारत–अरब आर्थिक संबंध' विषय पर प्रस्तुति दी।

डॉ. दुरइराज कुमारसामी

सलाहकार, आरआईएस स्थित एआईसी

- 5 मार्च 2019 को नई दिल्ली स्थित जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में 'समकालीन भारत–मलेशिया संबंधों में उभरती गतिशीलता' विषय पर आयोजित गोलमेज सम्मेलन में 'भारत–मलेशिया आर्थिक संबंध: उपलब्धियां और संभावनाएं' विषय पर एक प्रस्तुति दी।
- 11 मार्च, 2019 को पादांग स्टेट यूनीवर्सिटी, पादांग, इंडोनेशिया में 'हिंद–प्रशांत कनेक्टिविटी संभावनाएं' पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'सागर: हिंद–प्रशांत क्षेत्र में बुनियादी ढांचे के विकास में भारत का अनुभव' विषय पर एक प्रस्तुति दी।

RIS
Research and Information System for Developing Countries
विकासशील देशों की अनुसंधान एवं सूचना प्रणाली

कोर 4–बी, चौथा तल, भारत पर्यावास केन्द्र, लोधी रोड, नई दिल्ली–110 003, भारत । दूरभाष: 91–11–24682177–80
फैक्स: 91–11–24682173–74, ई–मेल: dgoffice@ris.org.in
वेबसाइट: http://www.ris.org.in

Follow us on:
www.facebook.com/risindia @RIS_NewDelhi www.youtube.com/RISNewDelhi

fjikV@iLrd

of'od nf{k.k esa vUrjkZ"Vªh; eY; J`[kykvksa dk vge ;ksxnku

आईटीसी और आरआईएस, जिनेवा, 2019

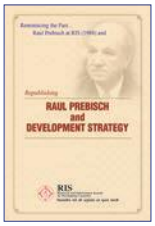

jkmy fizfc'k vkSj fodkl j.kuhfr

आरआईएस, नई दिल्ली, 2019

lfEefyr :i ls LoLFk Hkfo"; dh vksj% LokLF; lsok esa Hkkjr dh lk>snkfj;k

आरआईएस, नई दिल्ली, 2019

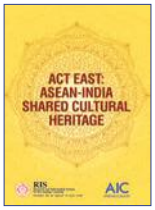

,DV bZLV% vkfl;ku&Hkkjr lk>k lkaL—frd fojklr

आरआईएस, एआईसी, नई दिल्ली, 2019

foKku vkSj çkS|ksfxdh lg;ksx ij nf{k.kh ifjçs{;

आरआईएस, नई दिल्ली, 2019

O;kikj vkSj fodkl ds fy, foÙk% nf{k.kh ifjçs{;

आरआईएस, नई दिल्ली, 2019

vkjvkbZ,l ds ifjppkZ i=

238 ns'k dh vkfFkZdkfjd lkf[;dh ds fy, lVhd jkg uhfrxr dep;kjh ij fot; iku dh ç.kkyh द्वारा कृष्ण कुमार और पी. के. आनंद

237 LFkkuh; eqæk esa O;kikj% uiky] Ãjku vkSj :l ds lkFk Hkkjr ds #i;k O;kikj dk –"Vkr द्वारा प्रियदर्शी डैश, मोनिका शर्मा और गुल्फेशान निजामी

236 ljdkj dh uhfr;ksa vkSj Hkkjr esa nok m|ksx dk fodkl 1947&2018 % ,d leh{kk द्वारा प्रशांत कुमार घोष

vkjvkÃ,l uhfrxr lkj i=

87 Åtkz {ks= vkSj foÙkh; ckt kj% Hkkjr ds fy, volj द्वारा सुभोमय भट्टाचार्जी

vkjvkÃ,l Mk;jh

खंड 15 संख्या 1, जनवरी 2019

fodkl lg;ksx leh{kk

खंड 1 संख्या 10–12, जनवरी–मार्च 2019

foKku dVuhfr leh{kk

खंड 1 संख्या 2, जनवरी 2019

foKku dVuhfr u;k vyVZ

अंक 8 : 16–28 फरवरी 2019; अंक 7 : 01–15 फरवरी 2019;

अंक 6 : 16–31 जनवरी 2019; अंक 5 : 01–15 जनवरी 2019

vkjvkbZ,l ladk; }kjk ckã çdk'kuksa esa ;ksxnku

चतुर्वेदी, सचिन 2019. 'व्यापार, उत्पादन और उभरती अर्थव्यवस्थाएं: कृषि एवं विनिर्माण में उभरते रुझान' *तुर्की नीति त्रैमासिक,* शीतकालीन 2019, खंड 17

चतुर्वेदी, सचिन 2019. अंतरिम बजट मुख्यतः अल्पकालिक जरूरतों और दीर्घकालिक विजन को संतुलित करने के बारे में है। *द इकोनॉमिक टाइम्स,* 03 फरवरी

चतुर्वेदी, सचिन और प्रियदर्शी डैश। 2019. 'भारतीय परिप्रेक्ष्य से हिंद–प्रशांत सहयोग'। *जापान स्पॉटलाइट,* खंड 38, संख्या 1, पृष्ठ 10–13. जनवरी–फरवरी।

डे, प्रबीर, सुनेत्र घटक और दुरइराज कुमारसामी। 2019. 'भारत में कनेक्टिविटी कॉरिडोर के आर्थिक प्रभावों का आकलन: एक अनुभवजन्य परख'। *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली,* खंड 54, संख्या 11

डे, प्रबीर और दुरइराज कुमारसामी। 2019. 'व्यापार लागत और व्यापार के आपसी संबंधों का आकलन करना: ग्रैविटी मॉडल के अनुप्रयोग', *भारतीय व्यापार विश्लेषिकी: रुझान और अवसर* में अध्याय 13, संपादक बिश्वजीत नाग और देबाशीष चक्रबर्ती, सेज पब्लिकेशन, नई दिल्ली

कुंडू, अमिताभ। (सह–लेखक)। 2019. 'प्रधानमंत्री श्रम योगी मानव धन: एक महत्वपूर्ण आकलन।' *भूगोल और आप,* 31 जनवरी।

कुंडू, अमिताभ। 2019. 'भारत में गतिशीलता: हालिया रुझान और डेटाबेस संबंधी मुद्दे' *सोशल चेंज* दिसंबर–जनवरी।

कुंडू, अमिताभ। (सह–लेखक)। 2019. 'भारत में प्रवासन, शहरीकरण और अंतर–राज्य विषमता' हक, टी. (संपादक), *सामाजिक विकास रिपोर्ट,* दिसम्बर–जनवरी।

कुंडू, अमिताभ। 2019. 'गरीबों को अप्रत्याशित लाभ?' *बिजनेस स्टैंडर्ड,* 23 फरवरी।

साहा, सब्यसाची (सह–लेखक)। 2019. 'एक वार्ता फोरम के रूप में विश्व व्यापार संगठन में नई जान फूंकने' पर टी20 जापान नीतिगत सार–पत्र, मार्च।

साहा, सब्यसाची (सह–लेखक)। 2019. 'सतत और समावेशी विकास के लिए वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं के विस्तार एवं पुनर्गठन' पर टी20 जापान नीतिगत सार–पत्र, मार्च।

सकारात्मक असर के लिए एक साथ पहल

ikQlj vfuy l|dyky
उप महानिदेशक, दक्षिण अफ्रीका का अंतर्राष्ट्रीय संबंध एवं सहयोग विभाग और वरिष्ठ सहायक फेलो, आरआईएस

'जी 7' के गठन के बाद से ही निरंतर लगभग तीन दशकों तक वैश्विक एजेंडा तय करने का काम संयुक्त राष्ट्र महासभा में नहीं किया गया, बल्कि यह 'जी7' द्वारा और फिर बाद में 'जी 8' द्वारा तय किया गया था। फिर इसके बाद वर्ष 1997–98 में वित्तीय संकट गहराने पर वैश्विक आर्थिक और वित्तीय परिवेश में मौजूद गंभीर चुनौतियों का सामना करने के लिए 'जी20' के गठन का सुझाव पेश किया गया। धीरे–धीरे, इसके एजेंडे का विस्तार किया गया। वैश्विक परिवेश के आपस में जुड़े होने के कारण आप एजेंडे के निरंतर विस्तारीकरण को नहीं टाल सकते हैं। वैश्विक दक्षिण के अभ्युदय को देखते हुए वे एक ऐसा वैश्विक प्लेटिफॉर्म भी चाहते थे, जिससे कि उनकी बातें या मांगें भी सही ढंग से सुनी जा सकें। 2000 के दशक के उत्तरार्ध में हमने 'वैश्विक दक्षिण' का सृजन या गठन करने की कोशिश की, ताकि विकासशील देशों को लगातार हाशिए पर रखे जाने की समस्या का निवारण हो सके। लेकिन 9/11 की आतंकी घटना के कारण यह प्रयास विफल हो गया। हालांकि, इसकी एक शाखा 'आईबीएसए' के रूप में सामने आई जिसका शुभारंभ वर्ष 2003 में किया गया था। एक छोटे 'एस' के साथ ब्रिक्स का आइडिया पेश करने से जिम ओ'नील को इसका व्यापक श्रेय मिला। हालांकि, दक्षिण अफ्रीका इसमें शामिल नहीं था। जब हमने इसे छोटे 'एस' से बड़ा 'एस' बना दिया तो वह परेशान हो गया था। लेकिन यदि वह ब्लॉक वास्तव में वैश्विक दक्षिण का प्रतिनिधि बनना चाहता था, तो वह अफ्रीका को दूर नहीं रख सकता था। ठीक इसी तरह से दक्षिण अफ्रीका 'ब्रिक्स' का पूर्ण सदस्य बना। अब ब्रिक्स का वजूद वास्तव में सुनिश्चित हो गया है। यही नहीं, ब्रिक्स वैश्विक भू–राजनीतिक आर्थिक संरचना को आकार देने में व्यापक असर डाल रहा है। ब्रिक्स के एजेंडे को संयमित तरीके से शुरू किया गया। इसका एकाग्र आरंभ में आर्थिक और वित्तीय सहयोग पर था। लेकिन जैसे–जैसे हमने सहयोग करना शुरू किया, एजेंडे का विस्तार बड़ी तेजी से होने लगा। हमें यह पता चला कि ब्रिक्स के साझेदारों के रूप में हम केवल अपने बीच ही सहयोग करने पर एकाग्र नहीं कर सकते हैं। हमें वृहद विश्व पर भी पड़ने वाले अपने स्वयं के प्रभाव या असर पर गौर करना होगा। ब्रिक्स को क्षेत्रीय एवं वैश्विक निकायों के साथ सहयोग और साझेदारी को अवश्य ही प्रोत्साहित करना चाहिए। जब चीन ने वर्ष 2017 में मेजबानी की, तो उसने 'ब्रिक्स प्लस' की अवधारणा पेश की। उल्लेखनीय है कि आप सिर्फ अपने क्षेत्र के ही देशों को आमंत्रित नहीं करते हैं, बल्कि आप अन्य विकासशील देशों को भी आमंत्रित करते हैं, ताकि वैश्विक गवर्नेंस संरचना को नया स्वरूप प्रदान किया जा सके। ब्रिक्स को अंतर सरकारी, निजी क्षेत्र, लोगों के आपसी संवाद, शिक्षाविदों और विचारक मंडलों सहित समस्त व्यापकता को निश्चित तौर पर ध्यान रखना चाहिए। वैसे तो आपसी मतभेद वाले अनेक क्षेत्र हैं, लेकिन हम सहयोग करने और अपने–अपने रुख में सामंजस्य स्थापित करने की पूरी कोशिश करते हैं। एकपक्षीयवाद और संरक्षणवाद का अभ्युदय विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) को कमजोर कर रहा है। ऐसे में गरीब और अल्प विकसित देशों पर ही सर्वाधिक मार पड़ती है। अतः हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि ब्रिक्स इन मुद्दों को सुलझाने के लिए एक समूह के रूप में एकजुट हो। दरअसल, स्थिति यह है कि यदि हम चाहें तो भी हममें से कोई भी इससे पीछे हटने का जोखिम नहीं उठा सकता है। कारण यह है कि इस व्यवस्था का हिस्सा होने के जो लाभ हम सभी के साथ–साथ वैश्विक समुदाय के लिए हैं वे ब्रिक्स के काम करने के तरीके के कुछ पहलुओं पर हमारे द्वारा आपत्ति जताए जाने की तुलना में कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं। पिछले साल हमने चौथी औद्योगिक क्रांति, 'भविष्य की नौकरियों' और स्वास्थ्य से संबंधित मुद्दों पर एकाग्र किया था, जो ऐसे प्रासंगिक क्षेत्र हैं जहां हम सहयोग कर सकते हैं। हमने संचारी रोगों पर एकाग्र करने वाले ब्रिक्स रिसर्च सेंटर का आइडिया पेश किया है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां हम अपनी तकनीक विकसित कर सकते हैं। हमें खुद को अभिनव बनाना होगा और अपने स्वयं के संसाधनों को एकजुट रखना होगा। यदि हम एक साथ पैसा लगा सकते हैं और एक (ब्रिक्स) बैंक बना सकते हैं, तो सहयोग के अन्य क्षेत्रों में यह क्यों संभव नहीं है, जहां हमारे पास रचनात्मक ऊर्जा है और जहां हमें उभरते दक्षिणी या विकासशील देशों की दृष्टि से बढ़त हासिल है। मतभेद निश्चित तौर पर हैं और ये सदैव रहेंगे। लेकिन बुनियादी क्षेत्रों में सहयोग और वैश्विक परिवेश पर सकारात्मक असर डालने के लिए एक साथ आगे बढ़ने की इच्छा बहुत मजबूत है।

इस वर्ष हम गांधीजी की 150वीं जयंती मना रहे हैं और हम नेल्सन मंडेला की 100वीं जयंती भी मना रहे हैं। हम 20वीं सदी की इन दो महान आदर्श हस्तियों और दिग्गजों के जीवन में कई समानताएं देखते हैं। नेल्सन मंडेला उस प्रभाव की बात करते हैं जिसे गांधीजी ने उनके जीवन पर डाला था और किस तरह से इसने उनके दर्शन को नया आयाम दिया था। नस्लवाद, उपनिवेशवाद, रंगभेद के रोष ने गांधीजी के जीवन और उन लोगों पर गहरी छाप छोड़ी जिनकी सेवा करने वे दक्षिण अफ्रीका आए थे। यही कारण है कि हम यह दावा करते हैं कि गांधीजी हमारे अपने थे। जो गांधी दक्षिण अफ्रीका आए थे उनका पहनावा अत्यंत सुरुचिपूर्ण होता था। लेकिन जब उन्होंने दक्षिण अफ्रीका को अलविदा कहा, तो वे मानसिक और शारीरिक रूप से काफी हद तक बदल गए थे। हमें इस व्यापक बदलाव में निहित संदेश को अवश्य ही प्रतिबिंबित करना चाहिए। आपके यहां यानी भारत में यह कहावत है–'वसुधैव कुटुम्बकम (पूरा विश्व एक परिवार है)'। अफ्रीका में, हमारे यहां 'उबंटू' की अवधारणा है यानी 'मैं हूं, क्योंकि आप हैं' जिसका अर्थ यह है कि मैं आपकी भलाई पर ध्यान दिए बिना अकेले अपनी भलाई पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सकता हूं क्योंकि अगर आप गरीब हैं, तो मैं भी हूं। गांधीजी का सत्याग्रह और अहिंसा का दर्शन आज भी प्रासंगिक है क्योंकि हम अत्यंत हिंसक दुनिया में रहते हैं। जब सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को अपनाया गया था, तो सूत्रवाक्य ये थे – 'आइए, हम एक समावेशी समाज बनाएं', 'कोई पीछे न छूटे' और 'सतत विकास'। गांधीजी ने बहुत पहले ये बातें कही थीं। हमें यह पूछना होगा कि आज हम किस तरह की दुनिया बनाना चाहते हैं और हम कैसे सामूहिक रूप से इन दो महान नेताओं से प्रेरणा ले सकते हैं। आइए, हम उनकी विरासत को अक्षुण्ण रखें। यह सुनिश्चित करना हममें से प्रत्येक की जिम्मेवारी है कि मानवाधिकार, गैर– भेदभाव, विचारों एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मूलभूत मूल्य अक्षुण्ण रहें। हम जो कुछ भी करते हैं, वह जन केंद्रित दुनिया बनाने के लिए होना चाहिए। गांधीजी के दर्शन जन–केंद्रित थे और यही वह संदेश है जिसे हमें आत्मसाध करना है। हमें अवश्य ही यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हममें से प्रत्येक में गांधी जीवित रहें क्योंकि हममें से प्रत्येक में एक गांधी हैं। ■

तिरुवनंतपुरम एवं पांडिचेरी में 'उभरती अर्थव्यवस्थाओं के बीच सहयोग और वैश्विक गवर्नेंसः ब्रिक्स अनुभव से सीख ' और '21वीं सदी में गांधी की प्रासंगिकता विषयों पर प्रोफेसर अनिल सुकलाल द्वारा दिए गए व्याख्यान के मुख्य अंश।